कन्या कॉलेज में राष्ट्रीय स्तर पर पांच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम आयोजित

महासमुंद। शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय द्वारा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर के पाँच दिवसीय संकाय विकास कार्यक्रम राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के सहयोग से 24 से 28 फरवरी तक हाइब्रिड माध्यम में आयोजित किया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षा, शोध, नीति-निर्माण एवं प्रशासनिक नेतृत्व के क्षेत्र में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना, समावेशी एवं सुरक्षित शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना तथा महिलाओं एवं वंचित वर्गों की निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना है। प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता के रूप में सेवानिवृत्त प्राध्यापक अंजना रानी, लोक प्रशासन विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। उनका व्याख्यान विषय था महिला एवं डिजिटल समावेशन : निर्णय निर्माण और प्रौद्योगिकी में बढ़ती समानता। कार्यक्रम का संचालन डॉ सरस्वती वर्मा एवं आभार प्रदर्शन डॉ स्वेतलाना नागल ने किया। कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याताओं, जनभागीदारी शिक्षकों एवं महाविद्यालयीन अशैक्षणिक स्टॉफ गुप्तेश नामदेव, उमा साहू, डॉ लोकनाथ तारक, डॉ चित्रलेखा साहू, डॉ हेमेंद्र साहू, डॉ संजय कुमार वर्मा, दूलामणि रौतिया, प्रेरणा कापसे, पूजा साहू, चमन आडिले, संतराम मन्नाडे, रामकृष्ण साहू, अश्वनी कुमार लोधी, अहिल्या लहरे, मनीष बंजारे, विनोद बंजारे तथा कामिन निषाद का उल्लेखनीय योगदान रहा।

वन उपस्थित थे।

व शिक्षण विधियों का अवलोकन मौजूद थे।

कॉलेज छात्राओं को लैंगिक समानता व सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई

कार्यशाला : माता कर्मा कन्या कॉलेज में पोष अधिनियम को लेकर चर्चा

भास्कर न्यूज | महासमुंद

शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ और रूसा के सहयोग से आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय संकाय विकास कार्यक्रम के तीसरे दिन गुरूवार को लैंगिक समावेशन के विविध आयामों की जानकारी दी गई। लैंगिक समावेशन 2.0: पुनर्कल्पना विषय पर आधारित इस हाइब्रिड कार्यक्रम का उद्देश्य शैक्षणिक नेतृत्व और प्रशासन में समानता को बढ़ावा देना है।

यह कार्यशाला 24 से 28 फरवरी तक संचालित है, जिसमें शिक्षा, शोध और प्रशासन में लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करने के लिए देश भर के विशेषज्ञ अपने विचार साझा कर रहे हैं। प्रथम सत्र में मंगलौर विश्वविद्यालय की डॉ. सुमा रोदनवार ने साहित्य और मीडिया में लैंगिक विमर्श को बताया। उन्होंने पृष्ठ से परदे तक विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि कैसे साहित्य, सिनेमा और मीडिया के माध्यम से समाज में लैंगिक भूमिकाएं बदल रही हैं। उन्होंने महिलाओं की बदलती पहचान और प्रतिनिधित्व पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता संघपुष्पा भतपहरी (प्रथम सत्र न्यायाधीश, जिला न्यायालय महासमुंद) ने कार्यस्थल पर सुरक्षा और कानून (पोष अधिनियम 2013) के बारे में बताकर महिलाओं की सुरक्षा पर कानूनी दृष्टिकोण साझा किया। उन्होंने पोष अधिनियम 2013 के प्रावधानों और आंतरिक शिकायत समिति की भूमिका पर जानकारी दी। न्यायाधीश भतपहरी ने जोर देकर कहा कि सुरक्षित कार्यस्थल ही वास्तविक लैंगिक समानता की आधारशिला है। इस दौरान

कार्यशाला में छात्राओं को जानकारी प्रदान करते अतिथि।

महिलाओं का निर्णय विकास के लिए अनिवार्य है : प्राचार्य

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शीलभद्र कुमार ने कहा कि डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी और तकनीकी सशक्तिकरण संस्थागत विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

ओमप्रकाश पटेल विभागाध्यक्ष भूगोल, डॉ. स्वेतलाना नागल, डॉ. सरस्वती वर्मा (विभागाध्यक्ष, हिंदी), ओमप्रकाश पटेल, डॉ. मनोज कुमार शर्मा, अजय कुमार श्रीवास सहित प्राध्यापकगण ओंकार प्रसाद साहू मौजूद थे।

दैनिक भास्कर

महासमुंद 27-02-2026

कॉलेज छात्राओं को लैंगिक समानता व सुरक्षा के बारे में जानकारी दी गई

कार्यशाला : माता कर्मा कन्या कॉलेज में पोष अधिनियम को लेकर चर्चा

भास्कर न्यूज | महासमुंद

शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय में आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ और रूसा के सहयोग से आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय संकाय विकास कार्यक्रम के तीसरे दिन गुरूवार को लैंगिक समावेशन के विविध आयामों की जानकारी दी गई। लैंगिक समावेशन 2.0: पुनर्कल्पना विषय पर आधारित इस हाइब्रिड कार्यक्रम का उद्देश्य शैक्षणिक नेतृत्व और प्रशासन में समानता को बढ़ावा देना है।

यह कार्यशाला 24 से 28 फरवरी तक संचालित है, जिसमें शिक्षा, शोध और प्रशासन में लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करने के लिए देश भर के विशेषज्ञ अपने विचार साझा कर रहे हैं। प्रथम सत्र में मंगलौर विश्वविद्यालय की डॉ. सुमा रोदनवार ने साहित्य और मीडिया में लैंगिक विमर्श को बताया। उन्होंने पृष्ठ से परदे तक विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि

कार्यशाला में छात्राओं को जानकारी प्रदान करते अतिथि।

कैसे साहित्य, सिनेमा और मीडिया के माध्यम से समाज में लैंगिक भूमिकाएं बदल रही हैं। उन्होंने महिलाओं की बदलती पहचान और प्रतिनिधित्व पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता संघपुष्पा भतपहरी (प्रथम सत्र न्यायाधीश, जिला न्यायालय महासमुंद) ने कार्यस्थल पर सुरक्षा और कानून (पोष अधिनियम 2013) के बारे में बताकर महिलाओं की सुरक्षा पर कानूनी दृष्टिकोण साझा किया। उन्होंने पोष अधिनियम 2013 के प्रावधानों और आंतरिक शिकायत समिति की भूमिका पर जानकारी दी। न्यायाधीश भतपहरी ने जोर देकर कहा कि सुरक्षित कार्यस्थल ही वास्तविक लैंगिक समानता की आधारशिला है। इस दौरान

महिलाओं का निर्णय विकास के लिए अनिवार्य है : प्राचार्य

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शीलभद्र कुमार ने कहा कि डिजिटल युग में महिलाओं की निर्णय-निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय भागीदारी और तकनीकी सशक्तिकरण संस्थागत विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकता बन चुकी है।

ओमप्रकाश पटेल विभागाध्यक्ष भूगोल, डॉ. स्वेतलाना नागल, डॉ. सरस्वती वर्मा (विभागाध्यक्ष, हिंदी), ओमप्रकाश पटेल, डॉ. मनोज कुमार शर्मा, अजय कुमार श्रीवास सहित प्राध्यापकगण ओंकार प्रसाद साहू मौजूद थे।

वक्ताओं ने प्रस्तुत किए अपने विचार

महासमुंद। शा. माता कर्मा कॉलेज द्वारा आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ के तत्वावधान में राष्ट्रीय स्तर का 5 दिवसीय संकाय विकास 24 फरवरी से आयोजित है। जो 28 फरवरी तक चलेगा। उक्त आयोजन राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यक्रम का मुख्य उद्देदश्य शिक्षा, शोध नीति निर्माण एवं प्रशासनिक नेतृत्व के क्षेत्र में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना, समावेशी एवं सुरक्षित शैक्षणिक वातावरण का निर्माण करना है। कार्यक्रम के द्वितीय दिवस शुभारंभ अवसर पर प्राचार्य डॉ. शीलभद्र कुमार ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि महिला सशक्तिकरण, लैंगिक न्याय तथा समान अवसर की अवधारणा को व्यवहारिक रूप देने हेतु शिक्षण संस्थानों को संवेदनशील एवं उत्तरदायी भूमिका निभानी होगी। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का भी उल्लेख किया। पश्चात प्रथम सत्र में मुख्य वक्ता सेवानिवृत प्राध्यापक श्रीमती अंजना रानी लोक प्रशासन विभाग, महर्षि दयानन्द विवि. रोहत क (हरियाणा) ने व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने डिजिटल युग में महिलाओं की सहभागिता, तकनीकी सश क्तिकरण, ई-गवर्नेंस में महिलाओं की भूमिका पर चर्चा की। द्वितीय सत्र में मुख्य वक्ता डॉ. कृष्णमणि भगवती अमरकंटक मप्र. ने उच्च शिक्षा में लैंगिक समानता, नीतिगत दृष्टिकोण एवं रूपांतरकारी रणनीतियाँ विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। संचालन डॉ. सरस्वती वर्मा ने एवं आभार प्रदर्शन डॉ. स्वेतलाना नागल ने किया। कार्यक्रम में अतिथि व्याख्याताओं, जनभागीदारी शिक्षकों एवं महाविद्यालयीन अशैक्षणिक स्टॉफ गुप्तेश नामदेव, उमा साहू, डॉ. लोकनाथ तारक, डॉ. चित्रलेखा साहू, डॉ. हेमेंद्र साहू, डॉ. संजय कुमार वर्मा, दूलामणी रौतिया, प्रेरणा कॉपसे, पूजा साहू, चमन आडिले, संतराम मन्नाडे, रामकृष्ण साहू, अश्वनी कुमार लोधी, अहिल्या लहरे, मनीष बंजारे, विनोद बंजारे तथा कामीन निषाद का सहयोग रहा।